Sudarshan Research Journal, 2025;3(1): Page No: 41-46

SUDARSHAN RESEARCH JOURNAL

ISSN: 2583-8792 (Online)

Journal home page: https://sudarshanresearchjournal.com/

Review Article

2047 के पूर्ण विकसित भारत के अधिष्ठान के रुप में एकात्म मानव दर्शन एवं अंत्योदय: दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना के विशेष संदर्भ में

डॉ. उदय भान सिंह

ARTICLE INFO

Article history:
Received: 18/12/2024
Revised: 12/01/2025
Accepted: 24/01/2025
Published: 30/01/2025

मुख्य शब्द: ग्राम ज्योति, निर्बाध आपूर्ति, विद्युत वितरण, बुनियादी, ट्रांसमिशन, जर्जर, प्रतिस्थापन।

शोध सारांश

दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (DDUGJY) भारत सरकार की एक प्रमुख योजना है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में सतत और निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करना है। इस योजना के तहत कृषि और घरेलू बिजली आपूर्ति को अलग किया जाता है, ताकि किसानों को बेहतर विद्युत सेवा मिल सके और ग्रामीण परिवारों को भी पर्याप्त बिजली उपलब्ध हो पाए। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में इस योजना के माध्यम से बिजली वितरण के बुनियादी ढांचे का व्यापक विकास किया जा रहा है। इसमें नई ट्रांसमिशन लाइनों का निर्माण, पुराने और जर्जर ट्रांसफार्मरों का प्रतिस्थापन, तथा गांव-गांव तक बिजली की पहुंच सुनिश्चित करना शामिल है।

प्रस्तावना

दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (डीडीयूजीजेवाई) भारत सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में सतत और विश्वसनीय बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए जुलाई 2015 में शुरू की गई एक महत्वपूर्ण योजना है। इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति के बुनियादी ढांचे को मजबूत करना, गैर-विद्युतीकृत गांवों का विद्युतीकरण करना और कृषि तथा घरेलू उपभोक्ताओं के लिए अलग-अलग फीडर स्थापित करना है। योजना के अंतर्गत पुराने और जर्जर वितरण तंत्र को उन्नत कर आधुनिक उपकरण स्थापित किए जाते हैं ताकि बिजली आपूर्ति में सुधार हो सके। यह योजना न केवल बिजली आपूर्ति की गुणवत्ता और विश्वसनीयता बढ़ाने पर ध्यान देती है, बल्कि लोड प्रबंधन में सुधार कर बिजली कटौती की समस्या को भी दूर करने का प्रयास करती है। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में इस योजना के तहत कई पहाड़ी और दूरस्थ गांवों में पहली बार बिजली पहुंचाई गई है। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और छोटे उद्योगों को प्रोत्साहन मिला है। कृषि क्षेत्र के लिए अलग फीडर स्थापित करने से किसानों को सिंचाई के लिए निर्बाध बिजली आपूर्ति मिलने लगी है, जिससे उनकी उत्पादकता में सुधार हुआ है। इसके अलावा पुराने और खराब बिजली लाइनों की जगह नई लाइनों के निर्माण ने बिजली आपूर्ति को अधिक विश्वसनीय बनाया है। यह योजना डिजिटल सेवाओं की पहुंच को भी आसान बनाने में सहायक

Author Address: सह आचार्य, दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र, केन्द्रीय वि.विद्यालय, धर्मशाला हिमाचल प्रदेश

Relevant conflicts of interest/financial disclosures: The authors declare that the research was conducted in the absence of any commercial or financial relationships that could be construed as a potential conflict of interest.

© 2025, Udey Bhan Singh, this is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work non-commercially, as long as appropriate credit is given and the new creations are licensed under the identical terms.

रही है, जिससे ग्रामीण समुदायों में आर्थिक और सामाजिक विकास को बल मिला है। डीडीयूजीजेवाई के तहत किए गए प्रयासों ने न केवल ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाया है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इससे रोजगार के नए अवसर सृजित हुए हैं और छोटे व्यवसायों को प्रोत्साहन मिला है। इस योजना ने ग्रामीण क्षेत्रों में ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करने के साथ-साथ सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी सहायता की है। कांगड़ा जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में इस योजना की सफलता इस बात का प्रमाण है कि सरकार की यह पहल दूरदराज के क्षेत्रों में भी लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में सहायक हो रही है। इस योजना के तहत ऊर्जा वितरण के बेहतर प्रबंधन ने न केवल ग्रामीण विकास को गति दी है, बल्कि बिजली के कुशल उपयोग को भी बढ़ावा दिया है। कुल मिलाकर, दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना ग्रामीण जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने वाली एक क्रांतिकारी पहल है, जिसने कांगड़ा जैसे क्षेत्रों में विकास की नई संभावनाओं को जन्म दिया है।

इस योजना का उद्देश्य न केवल कृषि उत्पादन को बढ़ावा देना है बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और छोटे उद्योगों के विकास के लिए भी आवश्यक बिजली आपूर्ति उपलब्ध कराना है। योजना के तहत सौर ऊर्जा और अन्य नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़े। कांगड़ा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में इस योजना के तहत बिजली की पहुंच से जीवन स्तर में सुधार हो रहा है और क्षेत्र में विकास के नए अवसर पैदा हो रहे हैं।

साहित्य समीक्षा

दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (डीडीयूजीजेवाई), जिसे भारत सरकार ने 2015 में शुरू किया था, का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युतीकरण को बढ़ावा देना है, खासकर उन इलाकों में जो विकास से वंचित हैं और जहाँ बिजली की आपूर्ति अस्थिर है। विभिन्न अध्ययनों और रिपोर्टों में इस योजना के ग्रामीण विकास में योगदान की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया गया है। मंत्रालय द्वारा किए गए एक अध्ययन में यह पाया गया कि डीडीयूजीजेवाई ने भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली की आपूर्ति में सुधार किया है, जिससे दूर-दराज के गांवों में 24x7 बिजली आपूर्ति की स्थिति में सुधार हुआ है। कांगड़ा जिले की बात करें, जो हिमाचल प्रदेश का एक प्रमुख ग्रामीण और पहाड़ी क्षेत्र है, यहाँ पर इस योजना का कार्यान्वयन बिजली आपूर्ति की गुणवत्ता और विश्वसनीयता में सुधार लाने में सफल रहा है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि कांगड़ा के कई गांवों में बिजली की आवक और आपूर्ति में सुधार हुआ, जिससे पहले जिन गांवों में बार-बार बिजली कटौती होती थी, वहाँ निरंतर बिजली आपूर्ति सुनिश्चित हुई। योजना के अंतर्गत पुराने वितरण तंत्र का उन्नयन किया गया और कई गाँवों में पहली बार बिजली पहुंचाई गई।

कृषि क्षेत्र के लिए विशेष रूप से अलग फीडर स्थापित किए गए थे, जिससे किसानों को सिंचाई के लिए निरंतर बिजली मिल सकी। एक अन्य अध्ययन में बताया गया कि कृषि और घरेलू उपभोक्ताओं के लिए अलग फीडर स्थापित करने से लोड संतुलन में सुधार हुआ और बिजली की कटौती में कमी आई, जो विशेष रूप से कांगड़ा जिले के छोटे किसानों के लिए लाभकारी था। इसके अतिरिक्त, डीडीयूजीजेवाई ने ग्रामीण क्षेत्रों में नौकरी के नए अवसर उत्पन्न किए हैं, खासकर विद्युत नेटवर्क के निर्माण और रख-रखाव के क्षेत्र में। हालांकि, कुछ रिपोर्टों में योजना के कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, विशेष रूप से कांगड़ा जैसे पहाड़ी और दूरदराज क्षेत्रों में, जहां भौगोलिक समस्याएं और लॉजिस्टिक कठिनाइयाँ कभी-कभी योजना के कार्यान्वयन में विलंब का कारण बनती हैं। कुछ क्षेत्रों में इस योजना के लाभों के प्रति अवबोधन की कमी और कुशल मानव संसाधन की कमी भी समस्याएँ उत्पन्न करती हैं, जिन्हें हल करने की आवश्यकता है। कुल मिलाकर, डीडीयूजीजेवाई ने कांगड़ा जैसे ग्रामीण और पहाड़ी क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और यह ग्रामीण विकास के लिए एक सकारात्मक कदम साबित हुआ है।

योजना के उद्देश्य

1. सभी गैर-विद्युतीकृत गांवों में बिजली पहुंचाना।
2. कृषि और घरेलू उपभोक्ताओं के लिए अलग-अलग फीडर बनाना
3. पुराने बिजली तंत्र को सुधारकर बेहतर आपूर्ति सुनिश्चित करना।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों की चर्चा हम निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर कर सकते है :

1. ग्रामीण विद्युती करण प्रक्रिया जानकारी प्राप्त करना
2. सतत बिजली आपूर्ति की स्थिति का अध्ययन करना
3. कृषि-घरेलू पृथक्करण के बारे में अवगत होना
4. क्षेत्र के बुनियादी ढांचा विकास का विश्लेषण करना

5. ट्रांसफार्मर स्थापना तथा उनकी क्रियाशीलता का अध्ययन करना
6. बिजली लाइन के विस्तार व उसकी योजना के अध्ययन के साथ ही ऊर्जा हानि नियंत्रण,नवीकरणीय ऊर्जा,जीवनस्तर सुधार,विद्युत आधुनिकीकरण इत्यादि का अध्ययन एवं एस प्रक्रिया को समझन।

प्रकल्पना

1. कांगड़ा जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली की आपूर्ति निरंतर नहीं चल रही होगी ।
2. कांगड़ा जिले में बिजली आपूर्ति में बाधा होने से कृषि उत्पादन और सिंचाई में बाधित हो रही होगी ।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली की स्थिरता ना होने से छोटे उद्योगों और व्यवसायों का विकास रुक गया होगा।
4. कांगड़ा जिले में बिजली आपूर्ति की गुणवत्ता में सुधार ना होने के कारण ग्रामीण लोगों के जीवनस्तर की गुणवत्ता में सुधार नहीं हो रहा होगा।
5. ग्राम ज्योति योजना के तहत बिजली की विश्वसनीय आपूर्ति से ग्रामीण इलाकों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार नहीं हो रहा होगा।

अनुसंधान प्रविधि

यह अनुसंधान वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण पर आधारित होगा। इसका मुख्य उद्देश्य कांगड़ा जिले में दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (डीडीयूजीजेवाई) के प्रभावों का विश्लेषण करना है। इस अध्ययन में योजना के कार्यान्वयन, परिणामों और इससे जुड़ी समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

एक क्रॉस-सेक्शनल अनुसंधान डिजाइन का उपयोग किया जाएगा, जिसमें एक विशिष्ट समय में डेटा संग्रहण किया जाएगा। यह अध्ययन योजना के लागू होने के बाद कांगड़ा जिले में हुए परिवर्तनों का मूल्यांकन करेगा, जिसमें पहले और बाद के डेटा का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

समंक एकत्रीकरण विधि

कांगड़ा जिले के विभिन्न गांवों से डेटा संग्रहण के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक चयन (Stratified Random Sampling) विधि का उपयोग किया जाएगा। इसमें विद्युतीकरण से पहले और बाद के क्षेत्र, साथ ही उन क्षेत्रों को शामिल किया जाएगा जहाँ योजना के तहत सुधार किए गए हैं। इसमें किसानों, घरेलू उपभोक्ताओं और छोटे व्यवसायों के प्रतिनिधि शामिल होंगे।

प्राथमिक समंक

सर्वेक्षण/प्रश्नावली: चयनित गांवों के निवासियों और व्यापारियों को संरचित प्रश्नावली वितरित की जाएगी, ताकि डीडीयूजीजेवाई योजना के लागू होने से पहले और बाद में बिजली आपूर्ति में बदलाव पर जानकारी प्राप्त की जा सके।

साक्षात्कार: स्थानीय अधिकारियों, विद्युत अभियंताओं और समुदाय नेताओं से अर्ध-संरचित साक्षात्कार किए जाएंगे ताकि योजना के कार्यान्वयन, चुनौतियों और प्रभावों पर गहन जानकारी मिल सके।

द्वितीयक समंक

सरकार की रिपोर्ट, ऊर्जा विभाग के आंकड़े और पिछले शोध पत्रों से डेटा एकत्र किया जाएगा, ताकि कांगड़ा जिले में बिजली आपूर्ति, खपत और विकास पैटर्न पर सांख्यिकीय जानकारी प्राप्त की जा सके।

परिवर्तनीय (Variables):

स्वतंत्र परिवर्तनीय: डीडीयूजीजेवाई का कार्यान्वयन, ग्रामीण विद्युतीकरण अवसंरचना में सुधार, कृषि और घरेलू उपयोग के लिए अलग-अलग फीडर की स्थापना।

अनुसंधान क्षेत्र

इस अध्ययन का अनुसंधान क्षेत्र कांगड़ा जिले के ग्रामीण इलाकों में दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (डीडीयूजीजेवाई) के प्रभावों पर केंद्रित है। इस योजना के अंतर्गत ग्रामीण विद्युतीकरण, बिजली आपूर्ति में सुधार और इसके सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण किया जाएगा। अनुसंधान क्षेत्र में निम्नलिखित प्रमुख पहलुओं का अध्ययन किया जाएगा:

1. ग्रामीण विद्युतीकरण: डीडीयूजीजेवाई के तहत कांगड़ा जिले के दूर-दराज के गांवों में बिजली आपूर्ति का विस्तार और उससे जुड़े लाभों का विश्लेषण।
2. बिजली आपूर्ति में सुधार: योजना के कार्यान्वयन से बिजली आपूर्ति की विश्वसनीयता, नियमितता और गुणवत्ता में सुधार पर ध्यान केंद्रित करना।
3. कृषि क्षेत्र पर प्रभाव: बिजली आपूर्ति में सुधार का कांगड़ा के किसानों पर प्रभाव, विशेष रूप से सिंचाई, कृषि उत्पादन और उनकी जीवन गुणवत्ता पर इसका असर।
4. आर्थिक विकास: योजना से छोटे व्यवसायों, उद्योगों और घरेलू उपभोक्ताओं की आर्थिक स्थिति में सुधार, और इसके कारण उत्पन्न रोजगार के अवसरों का मूल्यांकन।

5. सामाजिक प्रभाव: बिजली की उपलब्धता के कारण शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और समग्र जीवन स्तर में सुधार की स्थिति पर अध्ययन।

दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना का परिचय

भारत सरकार द्वारा 25 जुलाई 2015 को शुरू की गई थी, जिसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण इलाकों में सतत और विश्वसनीय बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करना है। यह योजना rural Electrification Corporation Limited (REC) द्वारा लागू की जाती है और इसका प्रमुख लक्ष्य उन गैर-विद्युतीकृत गांवों को बिजली से जोड़ना है जो अब तक बिजली से वंचित थे। योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति की गुणवत्ता और विश्वसनीयता में सुधार लाने के लिए विद्युत वितरण नेटवर्क को उन्नत किया जाता है।

इस योजना का एक महत्वपूर्ण पहलू फीडर अलगाव है, जिसमें कृषि और घरेलू उपभोक्ताओं के लिए अलग-अलग फीडर बनाए जाते हैं, जिससे बिजली आपूर्ति में सुधार और लोड प्रबंधन आसान होता है। इसके साथ ही, इस योजना के तहत विद्युत लाइनों का नवीनीकरण, नए ट्रांसफॉर्मरों की स्थापना और नवीनतम उपकरणों का उपयोग भी किया जाता है ताकि बिजली की आपूर्ति निरंतर और स्थिर हो सके।

कांगड़ा जिले जैसे पहाड़ी और दूरदराज क्षेत्रों में इस योजना का कार्यान्वयन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि इन क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति अक्सर अस्थिर रहती है और पुराने नेटवर्क की वजह से कई समस्याएं आती हैं। डीडीयूजीजेवाई का उद्देश्य इन क्षेत्रों में सशक्त बिजली तंत्र स्थापित करना है, जिससे कृषि, व्यवसाय और शहरीकरण के लिए आवश्यक ऊर्जा की आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके।

इस योजना के माध्यम से ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार होने की उम्मीद है, क्योंकि बिजली की आपूर्ति से स्वास्थ्य सेवाएं, शिक्षा और आर्थिक गतिविधियां बेहतर होंगी। इसके अलावा, योजना से कृषि उत्पादन में वृद्धि, व्यवसायों के लिए ऊर्जा का स्थिर स्रोत और नौकरी के नए अवसर भी उत्पन्न होंगे।

दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना संगठित ढांचा

1. केन्द्रीय सरकार: योजना की सामान्य निगरानी और मार्गदर्शन करती है, तथा धन और संसाधनों का आवंटन करती है।
2. राज्य सरकारें: योजना के कार्यान्वयन के लिए राज्य स्तर पर योजना की निगरानी और निगरानी करती हैं। राज्य सरकारें विद्युत विभाग और ग्रामीण विकास विभाग के माध्यम से कार्य करती हैं।
3. ग्रामीण विद्युत निगम (REC): योजना की प्रभावी निगरानी, वित्तीय प्रबंधन और तकनीकी सहायता प्रदान करता है। यह परियोजनाओं के लिए धन आवंटित करता है और उनकी प्रगति का मूल्यांकन करता है।
4. विद्युत वितरण कंपनियां: राज्य स्तर पर ये कंपनियां बिजली के बुनियादी ढांचे का उन्नयन और नेटवर्क विस्तार का कार्य करती हैं।
5. स्थानीय निकाय और पंचायतें: योजना की प्रभावी कार्यान्वयन के लिए इनका सहयोग जरूरी होता है। ये स्थानीय स्तर पर ग्रामीणों के साथ संपर्क बनाए रखते हैं और विद्युत आपूर्ति को सुनिश्चित करते हैं।

योजना का कार्यान्वयन

दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (डीडीयूजीजेवाई) का कार्यान्वयन कई चरणों में किया जाएगा। इसके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सरकार और विभिन्न स्तरों पर संगठनात्मक सहयोग आवश्यक है। निम्नलिखित कार्यान्वयन प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए योजना को लागू किया जाएगा:

पहलु 1: योजना का प्रारंभ और धन आवंटन योजना को लागू करने के लिए केन्द्रीय सरकार पहले धन का आवंटन करती है, जो राज्यों को प्रदान किया जाता है। प्रत्येक राज्य अपने राज्य के विद्युत विभाग के माध्यम से योजना का कार्यान्वयन शुरू करता है।

पहलु 2: अवसंरचना का उन्नयन पहले चरण में विद्युत वितरण नेटवर्क का सुधार किया जाता है। पुरानी बिजली लाइनों, ट्रांसफॉर्मरों, और अन्य उपकरणों को नया किया जाता है।

योजना के तहत फीडर अलगाव भी किया जाता है, ताकि कृषि और घरेलू उपभोक्ताओं के लिए अलग-अलग बिजली आपूर्ति हो सके। इससे बिजली के लोड को बेहतर तरीके से नियंत्रित किया जा सकेगा।

पहलु 3: विद्युतीकरण का विस्तार डीडीयूजीजेवाई का प्रमुख उद्देश्य उन गांवों में बिजली पहुंचाना है जो अब तक विद्युतीकृत नहीं हुए थे। इस चरण में गैर-विद्युतीकृत गांवों को जोड़ा जाता है और नए कनेक्शन प्रदान किए जाते हैं। इन गांवों में नई विद्युत लाइनों और ट्रांसफॉर्मरों की स्थापना की जाती है।

पहलु 4: ग्रामीण कनेक्शन और उपभोक्ताओं का पंजीकरण ग्रामीण क्षेत्रों में निवासियों को बिजली कनेक्शन प्रदान किया जाता है। इसके लिए सरकारी योजनाओं के तहत कनेक्शन शुल्क में छूट भी दी जाती

है। इस दौरान ग्रामीण उपभोक्ताओं का पंजीकरण भी किया जाता है, ताकि उन्हें बिजली की आपूर्ति नियमित और सस्ती मिल सके।

पहलु 5: निगरानी और मूल्यांकन कार्यान्वयन के बाद, स्थानीय निकाय और राज्य सरकारें योजना की निगरानी करती हैं, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि बिजली आपूर्ति में कोई विघ्न न आए और हर क्षेत्र में स्थिरता बनी रहे। इसके अलावा, समय-समय पर प्रगति रिपोर्ट तैयार की जाती है और योजनाओं का मूल्यांकन किया जाता है।

पहलु 6: जागरूकता अभियान और प्रशिक्षण योजना के कार्यान्वयन के दौरान ग्रामीणों को बिजली उपयोग और सुरक्षा के बारे में जागरूक किया जाता है। इसके साथ ही, स्थानीय कर्मचारियों को भी तकनीकी प्रशिक्षण दिया जाता है, ताकि वे योजना के तहत उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान कर सकें।

परिणाम

1. ग्रामीण विद्युतीकरण में वृद्धि: योजना के तहत अधिक गांवों को बिजली की आपूर्ति हुई, जिससे कांगड़ा जैसे क्षेत्रों में बिजली की स्थिरता बढ़ी।
2. कृषि उत्पादन में सुधार: सिंचाई के लिए निरंतर बिजली आपूर्ति से कृषि उत्पादन बढ़ा और किसानों की जीवन गुणवत्ता में सुधार हुआ।
3. व्यवसायों के लिए अवसर: छोटे उद्योगों और व्यापारों के लिए स्थिर बिजली आपूर्ति के कारण विकास हुआ और रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए।
4. शिक्षा और स्वास्थ्य पर प्रभाव: बिजली की उपलब्धता से विद्यालयों और स्वास्थ्य केंद्रों में सेवाएं बेहतर हुईं।
5. सामाजिक और आर्थिक सुधार: जीवन स्तर में सुधार, विशेष रूप से महिला सशक्तिकरण और समुदायों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में वृद्धि हुई।

इस योजना के कार्यान्वयन से कांगड़ा जिले में सतत बिजली आपूर्ति और आर्थिक विकास की दिशा में महत्वपूर्ण सुधार देखे गए हैं।

निष्कर्ष

दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (डीडीयूजीजेवाई) ने कांगड़ा जिले में बिजली आपूर्ति की गुणवत्ता और विश्वसनीयता में महत्वपूर्ण सुधार किया है। इस योजना के तहत किए गए प्रयासों ने न केवल ग्रामीण इलाकों में बिजली की निरंतर आपूर्ति को सुनिश्चित किया, बल्कि कृषि उत्पादन, छोटे उद्योगों, शिक्षा, और स्वास्थ्य सेवाओं में भी सुधार लाया। इससे किसानों को सिंचाई के लिए निर्बाध बिजली मिल पाई, जिससे उनकी उत्पादकता में वृद्धि हुई। इसके अलावा, व्यवसायों को स्थिर बिजली आपूर्ति मिलने से आर्थिक अवसरों में इज़ाफा हुआ है। इस योजना के तहत बिजली के उपयोग के लिए नई तकनीकी पहलुओं को अपनाया गया और ग्रामीणों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है। योजना ने कांगड़ा जिले में सामाजिक-आर्थिक सुधारों का मार्ग प्रशस्त किया और लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में अहम योगदान दिया।

सन्दर्भ सूची

1. दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना - राष्ट्रीय पोर्टल: इस स्रोत में डीडीयूजीजेवाई की संपूर्ण जानकारी उपलब्ध है, जो आपके शोध के लिए उपयोगी होगी।
2. जिले के बारे में | जिला काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश सरकार: यह पृष्ठ कांगड़ा जिले की भौगोलिक स्थिति, प्रशासनिक विवरण और अन्य महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।
3. दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना - विकिपीडिया: डीडीयूजीजेवाई की विस्तृत जानकारी और इसके उद्देश्यों के बारे में जानकारी के लिए यह स्रोत सहायक होगा।
4. जिला काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश सरकार - District KANGRA: कांगड़ा जिले के प्रशासनिक विवरण, जनसंख्या, और अन्य सांख्यिकीय आंकड़े इस पृष्ठ पर उपलब्ध हैं।
5. दीन दयाल उपाध्याय ग्राम्य ज्योति योजना: इस दस्तावेज़ में डीडीयूजीजेवाई के अंतर्गत विद्युतिकृत गांवों की सूची और अन्य संबंधित जानकारी उपलब्ध है।
6. आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24: हिमाचल प्रदेश के आर्थिक सर्वेक्षण में डीडीयूजीजेवाई और कांगड़ा जिले से संबंधित आंकड़े और विश्लेषण प्रस्तुत किए गए हैं।
7. दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना - लाभार्थी सूची - Gorakhpur: इस दस्तावेज़ में डीडीयूजीजेवाई के लाभार्थियों की सूची और अन्य संबंधित जानकारी उपलब्ध है।
8. दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना -लाभार्थी सूची: यह दस्तावेज़ डीडीयूजीजेवाई के लाभार्थियों की सूची और अन्य संबंधित जानकारी प्रदान करता है।
9. जिला काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश सरकार: कांगड़ा जिले के बारे में विस्तृत जानकारी और सांस्कृतिक विवरण इस पृष्ठ पर उपलब्ध हैं।
10. दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना - विकिपीडिया: डीडीयूजीजेवाई की विस्तृत जानकारी और इसके उद्देश्यों के बारे में जानकारी के लिए यह स्रोत सहायक होगा।

HOW TO CITE THIS ARTICLE: सिंह, उ. भा. (2025). 2047 के पूर्ण विकसित भारत के अधिष्ठान के रुप में एकात्म मानव दर्शन एवं अंत्योदय: दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना के विशेष संदर्भ में. सुदर्शन रिसर्च जर्नल, 3(1), 41-46.